Book-Post

6?

To,

If not delivered
please return to :

EDITOR,
THE VEDIC PATH,
P.O. Gurukul Kangri,
(U.P.) 249404.

अथ आषाढमासफलं ॥ दोहरा ॥ आषाढवदि एकमे गाजवी फुनवाय आवरनाद्र
व स्नके सैषतीम तिनकराय ॥ ६ ॥ आषाढवादलकरे चलै हे उत्तर वाय तौ जा
नेकार्त्तिक पीसावनमेवरषाय ॥ ७ ॥ आषाढवदि दशमी तिथि रोहिणी होए
रनदत्तनदीकनारे जोपरे पारषि रिवकृत वरषंत ॥ ८ ॥ जो आवे नारसैं मध्य
म समो विषान ॥ द्वादशदिन रोहिणी होवे तौ रवकाल वषान ॥ ९ ॥ लोकप
ये चौपद मरे र सक सभे हगाजाए ॥ उक्त भषीश्वर उमकहे विरला जीवेको
य ॥ १० ॥ जो आवे दिन वैदहे समोक बुरे जाए ॥ तबअन्नगहोर राजाको नि
श्चै करमनिजाए ॥ ११ ॥ त्रियोदशी के दिनमे रोहिणी एक घरी जो होइ ॥
घनी ग्रंथ दीवाल है वर्षा लीन ही होइ ॥ १२ ॥ अथ आरवाड मे काली रो
हिणी का विचार जिस दिन रोहिणी नक्षत्र मैं है व तिस दिन मे लघु मे रहे
आवे तिसका फल ॥ दो० ॥ रोहिन के दिनमे रोहिणी एक घरी ये हदकाल
पर्ति इति आकमे विरला जीवे कोइ ॥ १३ ॥ चौ० ॥ आरवाड वदी अम

मे.म.
८

2

निसा चंद चडत बादर मे घसा ॥ चार मास वर्षा लागेगी तो बरसे घन जानो घना ॥
॥१४॥ आषाढ अमावास्या दिने जोई आद्रा पुनर्वसु जो होवे ॥ काल सुकाल हि
समता लाजे नाले वो ना वे वोराइ ॥१५॥ दो॰ ॥ आषाढ सुदी पंचमी पवे वि
जुली जोर ॥ समो घनो अति निपजे घन वर्षे वहोत ॥१६॥ चौ॰ ॥ आषाढ
सुदी छठ को लाल लसे के विजुली बादर नाल ॥ सज्जन समे काजो नो न
लाहे तस पूर्ण वेदना कला ॥१७॥ दो॰ ॥ गाजे चौरे मे घकु वादर ऐसी पर करे
नीची ठौर सें ऊपरी ऊंचे ठौर वंध्या हि ॥१८॥ सात मि अर्द्ध हार नि मेली अ
समी वादर होइ ॥ तो सावण मे जा नेथा वर्षा घनी सहोए ॥१९॥ परिह
॥ आषाढ सुदि नौमी निर्मल देखीये ॥ संजसमे होए बादल तो फल ले पीये ॥
तो आद्र वहे होवे भी घनो न ही अंत ही सरकी फूटे फाल जो नीर चलंतही ॥
॥२०॥ दो॰ ॥ आषाढ सुदी नौमी से साठ दिन ना पजो इ जो बादर गाजे किने
समे सब लघु अति होइ ॥२१॥ अथ आषाढ पूर्णिमा फल ॥ चौ॰ ॥ आषाढ

३

चंद्र उतरदि रा होई उचाद दिन मे दिता की लहि ...ार जो जत घां . बहु होवे
ऐं इनाय इसन्नुमस प्रावेर न चावे ग॥८०॥ वैशाष मु दी एकाद स द्वादसी त्रयोद
शी वादल छाया हो ऐके विजुली गर्जित जाय॥ उपद्रव होइ तौ वद स एण छत्र भंग
होवे का लहि मुरा तर सनकर सारा॥८८॥ दोहरा॥ जे वेशाष की पूर्णिमा घन के
करे, त्र रंन॥ तौ आद्रव मे काल होइ को इनमें षेयम॥८९॥ ज्ये विशाह निमंगलता
र जेठ अमावास्या होवे वैशाष॥ छत्र भंग वा घन स वल मु निसद पै सेना व॥९०॥
अथ जेठ मास फल॥ दो॥ जेठ मास चैत्र चित पेठ चलत जग नाथ॥ तौ आ
नो घन वज्र परे घर तीसरे निसमाय॥९१॥ जे हन होवत पही मा घन होवे
सीत॥ तौ वर्षा थोडी होवे षोडे धन समान॥९२॥ अथ जेठ वदी पडवा को
फल॥ दो॥ जेठ वदी पडवा दिने जे होवे रविवार॥ वाय घनी तौ चाल होमं
गल रोग अपार॥९३॥ गुरु शनि शुक्रवार होइ घनो मेघ प्रगट धान॥ बुध
वारि दुर्भिक्ष पर तक होइ कइ क वात॥९४॥ जे हो वैशा निवार ही घ न जंग क
रे मो हन वर्ष तमृ मव रिपर जा घनी मरे॥९५॥ जेठ पदि पहिले विषेग।

मे. म. ५

तीजी जल सकार ॥ चौ ॥ जो होवे जो पदा घने नखे पद बार ॥ ८६ ॥ जो हस्ता ही स्वाती ही गई
और जुगल वो मूल जेष बदी पड वात पीजा लेवारे चूल ॥ ८७ ॥ जेष्ठ अमावस्या वार सु
नि जो होवे विषयोग परतन एको विंद जलेछ उतंग पशु रोग ॥ ८८ ॥ दविषा नि
मंगल वा दीयेत्र मावस्या जेठ जान वीरतन अनूप काल दुर्भिक्ष मिप जित नही
जग चान ॥ ८९ ॥ चौ० ॥ जेष्ठ अमावास्या संध्या समै सूर्य देवे जिस वाय मै मु
ह्य प्रदीदुती पाल वो वंदरु वितप श्चिम चडे तो मंद ॥ ९० ॥ दषित आपम ते
उत्तर चडे समो जलो होवे पंडित पडे ॥ घे सूर्य ते द सिरा चडे काल घने ।
उपद्रव होवे ॥ ९१ ॥ दो० ॥ जेठ पून मे मूल न ही अपवा नही घन विंदु ॥ तो सा
वन सु को ज यो समो बुदो अत मंद ॥ ९२ ॥ दो० ॥ जेठ मूल न नक्षत्र मे गाजवी
जु जल धार आवण आद्रव सु क मै समो न हो सी वाद ॥ जेठ मदी दूज मे आ
पवास हे पाव गाजवी ज घन वादल गर्जे तो देषो ॥ ९३ ॥ सो० ॥ जेष्ठ र
है दिन देव तो मवृष्टि जे जल घर पदि तन नीर निमाणेइं दूनमें वे आपजल ॥ ९४ ॥ राम ५

ने०अ०
८

नक्षमोहोई निश्चय न जानो पंडित लखै न ग्रंथ॥२९॥ वायु कोण चले जे वायु शाल
नक्ष सावन विख्यात॥ ऊगै नैऋत ईशान वहै थीर खंड अमृत जगल है॥३०॥
निष्फल घन गाजे है ठि राइ नव खंड डोले वरुण पधाइ॥ सांझ समेइ [illegible] कै
विचार कालरु कालेल खो आचार॥३१॥ अथ श्रावण मास फलं॥ दो०॥
जेठ मूल जो बिंद सि पोतीं को ऊरू नहीं कोइ॥ वर्षा श्रावण पंचमे समोद्य
नै तौ होइ॥३२॥ श्रावण वदि दिन चौथ कै निर्मल होवे आकास॥ तौ
अठारा याम ही जलधर करै विकास॥३३॥ चौ०॥ श्रावण वदि की चौ
थ से काल वडे विवाद लम मंझार॥ तौ पैताली दिन लौं मेघ न दरसै नि
सन, आवे छी॥३४॥ दो०॥ श्रावण वदि की पंचमी, अर्द्ध निशा लैं काल
जो बादल गाजे नहीं तौ परसी जग काल॥३५॥ श्रावण वदि जे अष्टमी
जो है वै घरि घरि मंगल चार॥ चौ०॥ श्रावण वदि की एकादशी जो उ

घाघि वा
रमीव
हैं सर्वत्र
मै १

S

राम
८

6

अदी पूर्णमा जोई रवि वार। रोगी दुख कार ॥ बुधवारी तो लक वो हु मरे होवसी तला

घर घर परै ॥२२॥ मंगल वार जो कहै है मी कृपा नि दुर्लि तन जीवै को ई ॥ गुरु शुक्र

शनि वार नाज समो न्हले दुष्काल ॥ २३॥ परि ॥ आषाड अदी पूर्णवा

दल गाज है हो त समा ग्रत घना सकल सुख राज है ॥ जे निर्मल हो त रात तब समा

न जानी ये काल परै सब ठौर इमे वखानीये ॥ २४॥ दो ॥ आषाड सित पूर्णमा जो

चले उत्तर वाय ॥ काल घनो नर सीसमै देसीम सक या हि ॥ २५॥ घर घर मे

निद्रा माग हीं लो कवे .. नार नहीं दान ॥ ... देव न पशु मरे नि ... कर म

न ध्यान ॥ २६॥ अथ आषाड अदी पूर्णमा का विचार ॥ ध्वजा की पवन वि

चारि ये मास आषाडे दि वा जान सु ध्वजा घरी जो है व पवन रस ॥ जे तो चले पूर्व

वाय नि ... जि ता अन्न घनो सुख पाइ ॥ २७॥ अग्नि कोण ते चलहै वाय हो एकुर्भि

तहीं जल नस जाय ॥ दक्षिण दिशा ते च ले समीर ति सी दिशा नृ जे न ल वीर ॥

॥ २८॥ नैऋत कोण ते विंदन हीं परै जी व सकल जग न्हु ... मरे ॥ पश्चिम पव

ज्यो॰ मा॰
९॰

7

तेहाद्शमासफलनाम प्रथमो ऽध्यकार समाप्तं ॥१॥ अथ नक्षत्र वर्णलक्षनका॥
चैः॥ गुरु रवि मंगल पुरुष पिछान शुक्र शशी स्त्री वनता जानु॥ शनि बुध केतु
नपुंसक है जो आश्लेष जो गुरु मुख के है॥१॥ पद ही है॥ मूला पूर्वाषाड उत्तराषा
ढ ही श्रवण धनेष्टा शतभिषा गाढ ही॥ पूर्वा भाद्रपद उत्तराभाद्र वदा रेवती
अश्विनी कहीं सुन्दर स्त्री जान है॥२॥ जानो कृतिका रोहिणी मृगशिर एह जेतो
दश पुरुष पिछान नक्षत्र एह कहे॥ अनुराधा जेष्ठा जानी येक हैं नपुंसक तीन
अंश्च बखानीये॥३॥ दो॰॥ देखु जो आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा जानतु॥ मघा पूर्वा
फाल्गुनी उत्तराफाल्गुन जान॥४॥ गज चित्रा अरु स्वाति ज्यों यह दश वनता एह जो
नरतर स्त्री जो एक मिलत ही वर्ण को हती होव॥५॥ पुर्ष पुर्ष मिलता जब अंकूर हीर
छाय स्त्री मिच॥ मिलें नपुंसक नपुंसक को वर्ण को, प्रति दे है॥६॥ अथ नार स्वभ सम्मे कोवि
चार॥ चउक्त॥ चैत्र सुदी एकम दिन रेवत मे वैशाख एकम भेव॥ ज्येष्ठ प्र ही एक राम
म मृगशिर पुनर्वसु ... प्रतिपद॥७॥ दो॰॥ चेत जो वैशाख ही जेठ अरु ९॰

रोहिणी नाम नक्षत्र तौ तिंसा श्रावण चौथि देवे छे तीकार जो वृक्ष होवे मै हे होवे ॥३८॥
जे होवे वार शशि ती यम च्या मस मावदी नीयो वीय। तेरस दिन रोहिणी नक्षत्र
कालपर तिजांन सर्वत्र ॥३९॥ आदर्श अमावास्या मंगल वार असलेषा नक्षत्र
रूपी डाकार ॥ न्ह छदोष जगवे ऊताम रेकें हीमे चकहीसो कापरे ॥४०॥
अथ आषाढ मास फलं ॥ दो० ॥ आषाढ वदि की पंचमी जे घन नहीं वरशंति ॥
तौ निश्चै मे जानीये जल घर वौ ऊ वरसंत ॥४१॥ आषाढ मै नौमी रूप जो दुवा
दल छांडाऊ घा होन ॥ सब देश तै वर्षा जान लोक सुषी जग मै वह मान ॥४१॥
आषाढ अमावास्या जे होवे शशि वार तांकी पंडित करो विचार ॥ अन्न घनो ज
ग होवे सुषी घर घर मंगलचार कोई नाडु षी ॥४२॥ अथ श्रावन मास फ
लं ॥ दो० ॥ श्रावन मास की अमावस्या जे होवे शनि वार ॥ मध्यम सम्वा वषा
नीये तिसी मास फल जाण ॥४३॥ इति श्री मेघमालायां निमेघमाज विरच

बदि की पंचमी ॥ मंघगव दि की दसमी जो माघव दीसत पंच ॥२४॥ दून
दिन बिजुली वादल लैमै मेह ता को विचार ॥ श्रावण भाद्रव चैत्र अश्वन के चतुर्थ तव
ऊ जल धार ॥२५॥ पचि हा हद्र ॥ कार्तिक शुदि ये पंचमी र विवार जो होइ ॥
द लिवि विषेस माहो वेदे सविचारी या हि ॥ दस्यापसे री श्राद्धनवि के तो जानीये
पुष्ट न उलवाति ॥ सा जे वारी होइ तो विषे वीसतो वीह पसेरी, अन्नवि
के नहीं घटहो ॥२७॥ मंगलवार होए तो विषे आठहो ॥ उछ्मा सेरी, अन्न कि
नहीं घटहोइ ॥२८॥ विषेवा राजान तूजे बुधवार होवद्वा दस्यापसेरी, अन्न
न विके देष विचार हो ॥ वृहस्पति होए जे वार विषे षट सारजाए ॥, अन्नविके
पसेरी, श्राठ ठसतजाए विचार ॥२९॥ जे शुक्र विषे सतहे अन्नजेपसेरी सतजाए ॥
जे होवि सनिवार विषे पंजतजाए बुध ॥ काल विषमा तहो वेहाहा कार चौप
दा वौ ऊ मटे मके षेती, अन्न ॥३०॥, अष्य, अन्न गंयात ॥ रविमंगल हे वारमए

सोमपंचवु घतीन जीवसकादिन होर मरण शनि दुर्भिक्ष तिसकीन ॥ ३१ ॥ तोलक हे
रहै तीस कोस दीमरण सव जांन पिछला चालीसेर को मरण पंजाव पिछान ॥
॥ ३१ ॥ इतिका र्तिक शुदि पंचमीफलं ॥ अथ दिवालीफलं ॥ दो॰ ॥ रविशनि
मंगल होवे स्वाती नक्षत्र आयुषयोग सीयमालतीका मे वघे वाय तनर मोग ॥
॥ ३३ ॥ छत्र नगपर्वतगिरे चौपद मैं रोग होइ ॥ गर्भपरु तती जी वाक टवयुद्धि
करु पडु होइ ॥ ३३ ॥ अथ मार्गसिर मासफलं ॥ दो॰ ॥ मंघर सिर जो वदिकी
पंचमी घटा होत तु होर ॥ वर्षंत वर्षा जो होत चार मासजल जोर ॥ ३४ ॥
मंघर सिर विजुली चिवे श्रावण जल लेजल ॥ जयी काल घ कालको गर्भ
संपूर्ण रहा ॥ ३५ ॥ चौ॰ ॥ मार्गसिर अमावास कुरजेवार मूलअभीत अरु
देइ विगाड ॥ मघिजा होवे जगत नाजकरि शाखा विगडे का जु ॥ ३६ ॥
अथ पोषमासफलं ॥ चौ॰ ॥ पोषमें विजुली गरि जितनादर मैं अथवा घृ
वैवायु गर्भ मूलछ ...॥ जान वर्षत श्रावण मैं घन आन ॥ ३७ ॥ पोस

आषाढ श्वानोकी शुद्दि एकमैचार नक्षत्र माह ॥९॥ संवत्सरएगेह है तिसका चारोधं
भ॥ जेनाहे घरिकोर यो इन विन घरि दुर्लेज ॥१०॥ चारोहोव लिषंनर है तौ वरश
तिचोमास॥ जो धनमाहो वेन हीन ही वरषत तिसमास॥१०॥ अथ मेंरी हिरणी चक्र॥
दो०॥ लग्न चक्रापैहले करो सागर स्वार वनाय॥ पर्वत अथ सुजानीये चारे अंग
कहाय॥११॥ तट अथ जानो पंडितो मे धर्म कांति अदिको दीजे घरि आदि
के अंक अक्षर मे सव लिष॥१२॥ लिषन जात अष्ट छवीस ही अंगे दो दो देह॥ और दो
इ एक एक लिखो सो हिरणी को फल देव॥१३॥ जिसमे पर है सो हिरणी तांकी करो
विचार॥ कालइ काल की वर्षा नर्दाल छो विचार॥१४॥ सागर पडै पडिजे
नपवी डसतम तट घुन जोंन पर्वत विंदुन धान पर तअंगे वंड तिमान॥१५
अथ ग्रह राशिफलं॥ दो०॥ बुध गुरु एक जे राशी मे आवत तौ ऊ विचार॥ व
र्षा होवे वीउ घनी, अन्न घनो संसार॥१६॥ गुरु शुक्र एक राशि मै तीजो
शनि जो जाउ॥ घनवर से सन्न जगत मै मेघ धपो सुनाय॥१७॥ गुरु
शुक्र दोनो मिले दक्षिणा दो करदेव॥ कैसा जाऊ जे घने के घनवोऊ वर

सेतू॥१८॥ मकराशि एक मै पंचग्रह ह्नै रसौम्य जो आव॥ छत्र भंग राजा मरै अष्प वाच न
न ठु जाय॥१९॥ चौ॰॥ मंगल राशि गुरु एक ठा होवे एक राशि मे देखे जो इस कल जग
त मै वर्षा परै प्रजन्न घनो सब के घरि घरै॥२०॥ धनि शुक्र मंगल एक राशि करत राज
कौ निश्चै नाश॥ प्रजा नाश करै जग हानि कहो पंडित साची जानु॥२१॥ अथ मूश
लयोग॥ दो॰॥ आदिद्रा निक्षत्र मध्य गुरु प्रेत कैस्म ही जाणु॥ तिन रासे तिन गह
क्र मैच नामर तजग जति॥२२॥ मूशल योग जो नाम दुसकर तजगत दुख काल
जीवत विरले लोक कोइ नर तीनो लोक विजाल॥२३॥ अथ अंगार योग॥ चौ॰॥ ती
न उत्तरा मृगशिर आरुण पुष्य पुनर्वसु चष्टो ठान मंगल ग्रह इन मै जो आवे
योग अंगारिक एति कहावे॥२४॥ जो ले मंगल इन मे होई तौ लौ मही वर्षा नाहे
ई॥ रहे बादल होहि आकाश मेउ अक्रम धीश्वर वैसे लाखे जाउ॥२५॥ सूर्य आगे
मंगल होई तो लोमी ऊपर रैन हि कोई॥ जो सूर्य के पाछै आवे तौ वर सेगो घन
जग आप॥२६॥ दो॰॥ मीन राशि मूर कर्क ग्रह मंगल तुल मे आय॥ घेक छत्र
छत्र माल सै विरला कोई बाए॥२७॥ आदि राशि निक्षत्र मध्य रवि प्रेत नमजा

श्विनी रेवती तीन जे श्रवनि हे ते वेद नमे ॥ लीन रिख धरि ति तौ नै क्राति कौं राग ही देखावै
करता उन ॥८८॥ मृग कछ के कोरा नाम सकजा राघत मा लहि रेवता पुरहान ॥
महासद्वैत्र रू सोर होर वलनक्षत्र रूप रकासे चैार ॥८९॥ देखाइ ही है नेक्राति
कौं गन इन देखानि कौं ाकर है हे सेन्या ॥ कही बात साची एक जाल इसकौ जानो सो
जगलाल ॥९०॥ चरि हो ॥ पुष्य जो आद्रा जारु पुनर्वस तीन ही तौ प श्रिपदि
श श्रानि दृष्टि न देखै लीन ही ॥ अबुधनके बंती पूर्वमालवाव घर हो सिंह सैाद
ष्ट मालवा ॥९१॥ कहित परेत हि देखा जल स्या जानये ॥ श्रौर पदासहि राजश्रिपा
मनि, श्रानि ये ॥ इन देखि नकानाश ग्रानि श्रर करतहैं ॥९२॥ सो ॥ मघाश्रे
घाजान, श्रोहू पूर्वाफलगुनी जेष्टानि मिल, श्रान वायव कौं राहु दृष्टि धरि ॥ सो
मारू मेहूहिं अंगासर स्वति वेसम द्रिमही ॥ ष ओ जलंधर शैग श्रिरू गजरात
वरासही ॥९४॥ दिशाकर तए नाश्रा रविसतवो फलल ही ॥ अब रेवदशामध
जोगकहिं तबातमन मेघद्र ॥९५॥ सेवकरछंदा ॥ लक्ष्यहसविज्ञा उवाहै
फालगुनी जपुग नाम ॥ जेष्ट निश्रर श्राद्र नमे परतउत्तरहान ॥ कीरतसर

कस्मीर मथुरा गाजना केदार ॥ मंडला नैपाल खस है जान ताही विचार ॥ ८६ ॥
कहि पोहे मल छ देश ही और लघुरासान ॥ है हि माश्र पग्पार मोरहि उत्तरदिश
ठान ॥ पउत हृ छ इनमे धानिकी साढू ग पारहे हारनास ॥ उत्तरदिश वषानीये
कहे भ्रम नही और ॥ ८७ ॥ सवैया ॥ स्वाती विशाखा पुनर्वस अनुराधा हि आद्रव
सेर वि वो सत जो इ ॥ एक पद हि कुरुक्षेत्र ब्रह्मस गंगा द्वारल पो जे त होई ॥
पांच मस्रीन रुह हस्तनपुर षट् कोरण ई थानक हे मनि सोई ॥ हृष्ट घरे स्वाति इ
नके नीतर वाति इने पर और ना लेइ ॥ ८८ ॥ चौ॰ ॥ मगध हि द्र सौरा
ष्ट्र मालती जी कृतिका प्रानि इन नाल मध्य देश तो शनि की दृष्टि इन देश
न मो पर लोपी ह ॥ ८९ ॥ मध्यदेश महि नगरी ए हि मिथुला चंपा कांपली ते
हि ॥ अहिछत्रा कोसंबी गया और मेषला मथ्यर हि धरा ॥ ९० ॥ जाण अरु ध्या
प्रकू प्रयाग अंतरवेद कनोज सत्र्यागर इन देशनि का नाश करा अरु और
देश मे सुष हानि या हु ॥ ९१ ॥ जिस दिशा नगरी शनि की दिष्ट ता को होत हरोतो

मे.मा.
२५ पूर्वी फाल्गुनी जौं हु नमेघा निश्चाविसहो ॥ तौ इहि देशन महि दुख कहे ॥८०॥
पूर्व प्रसवंध पै बारह देशको मारू प्ररूखे बातरः ॥ वनेवास वरेंद्र हि मालाम्र
धध प्रस्पदृन देशन हानी ॥८१॥ पूर्व दिशामे देश जो ए हि इन में हि प्राणि दिख
को रहो ॥ इनको हि विघनो विनाश कहि तमे चुहोइ प्राणि विनास ॥८२॥ चौ॰
उत्तराखाडा श्रवण धनेष्टा जो शनि इन मे श्राइ ॥ तौ इह देशनि इन मे हो
वे श्रनि को ए दिश जाई ॥ कुवज कुश ले दाहल वंग ॥ प्रंग देश कलिंग ॥ राट
स्त्रिजिल प्ररू उद्यान ॥ श्रोरू जयं क्रांग ॥८३॥ शनि नक्षत्र इन वसत इन देस
नि तौ दीठा नाश करत इन ही घना ॥ श्रोर तर फलघु पीडा ॥८४॥ शनि निष
पूर्वान्नाद्रपदि उत्तरान्नाद्रपदनि ही ॥ जो इन महि शनि प्राव हि दक्षिण दिशा
महि हान ॥८५॥ सिंहल द्रुजो न्नीमरूघ मध्य होवनवार ॥ तानि में हंस किं
किंधा श्रोरू लंक मननि धारि ॥८६॥ क्षेत्र त्रिकूट देश ही श्री पर्वत इकनाण राम
देश राज्यादा इहि इ छिशानि ए हि दक्षिण मे जाणु ॥८७॥ चौ॰॥ जरणीत्र २५

16

वज्ञारा घनो उपद्रव नृपकी हांन॥७२॥ शनि वृश्चिक हीं कंन्या के गेहि ताका फल
तुम जानो ए हि॥ नव कोटी मारू विललाई होत उपद्रव घना हि थाहि॥७३॥ तु
ला मूलि मे शनि आवे सही ताका फल पंडित इम कही॥ कांसी महि वरसे तल
वार त्रय वा पडिसी निश्चे काल॥७४॥ शनि धन मे तो इह फल जो होइ दि
ल्लीदल त्रनेग सो होइ॥ घना होति दिल्ली संग्राम पर जा नाज उपर सी जा ले
॥७५॥ मकर कुंभ में शनि आवे तो इत्र त्र घनो सब जग माहि होइ॥ घरि घरि
होत सकल आनंद कोई ना दिसे दुखी आमंद॥७६॥ मीन शनि जब कार
ता वा हम न दे शनि का करि ता ना स॥ अथवा धन होवे पर लो काल सागर को
जल ता उलाल॥७७॥ पूर्व दिशा दीसै जु लंति साधि लो क जग घने द्वा पंति॥ नदी
नीरु जविनि र्वे सहे वेना वर्षा परंति जान॥७८॥ बीयो बीज सबी ऊड जाइ बीप
४२ दि कां जग [illegible]॥ वाद वरी रानि श्रर फिरे कहे मेघ जग कार जो लहे॥
॥७९॥ अथ नक्षत्र शनि कूर्म चक्र फलं॥ चौ०॥ अश्व मूल दो इकु जान ती जी

मे॰ ऋ॰
५

रस्मालेति समासमैंजन घर नहीं वरसे द्र॥६३॥ अथ उक्त॥ ... ता... मास गली निर्मल
चार मास जल होवै जलगल॥ जिहि जिहि धामै काढे वादल तिहि तिहि जा सेजल ने
हि आगल॥६४॥ अथ माघ वदी [illegible]मी का फल॥ सो॰॥ माघ वदी नौमी दिन मे
मान नक्षत्र जो होई तो आद्रव क्र दि॰ तामी यो जल धर वै हता होई॥६५॥ अथ उक्त॥
माही सात म फाल्गुन पांच म चैत हून वैशाख एक मै॥ एहि तिथि मे वादल जल
गौन फाल्गुन आषाढ, अन्न तैं होई॥६६॥ माघ वदी अमावस पारिवार वादल, अथवा
होई जल धार॥ तो भाद्रव की पूर्णमा जान जल धर वरसति निश्चै जान॥६७॥
अमावास्या रवि शनि मंगल वार घनी वात अरु देख उदगल जाग॥ सो
वत् जो होवे अमावास्या रहे सुख प्रजा ऊपजति सस्य॥६८॥ अथ फाल्गु
लन फलं॥ दो॰॥ फाल्गुन मास पवन वगै मा रे मार करंत॥ माघ मासे
वीत्ते तो जानो निश्चै करी घनो समो न ही, अंत॥६९॥ चौ॰॥ फाल्गुन वदि
...मन्नाल कृत्तिका की घटी निहार॥ जेती घटी सकृत्तिका होई तितने वि

17
रान
५

लग

स॰ तिनि सप्तमी चढत सूर्य बादर मैं जब जोरंग ॥ तौ सावण मैं वर्षत तरहै तीन प
ग दसा दिन सैह ॥ ५४ ॥ दो॰ ॥ माघ कृष्ण सप्तमी जे बादर देखै सो ॥ तौ ग्रष्ट
ग मी घसी वर्षा दिन तेलो पेख ॥ ५५ ॥ माघ कृष्ण दीजो सप्तमी हो वै जो सेमिचा
गे लपरे वहु युद्धि हो सबसे गाज तरवार ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ माघ कृष्ण दी ग्र
मैं तचंदर चढत बादर न हो मानद्र वकंग हो वे फल सही ग्रप वा काल
माघ कृष्ण दी की ग्रष्टमी बादर मैं हो वे चंद ॥ समो
वरहम कही ॥ ५७ ॥ दो॰ ॥ ... ॥ ५८ ॥ हाईद ॥ माघ कृष्ण दी की नौ
मी तब हे कैं उ मैं बढ़ तो वर्षत तरई ॥ ... हि विचारी दीपै ॥ ग्रषाढ़ ते
मी निसा निहारी पै राशि कों होइ परवार तो ए हि नर तरसता ॥ ५९ ॥ दो॰ ॥ ग्र
मेकुं नमूले वरष ता ग्रन्न महि गो होइस हि नर लाह ॥ चौ॰ ग्रान्न घम रे
दि सवार पुष्पन सब नौमी जोति षि होइ ग्रनेलाह ॥ चौ॰ ॥ माघी की पूर्णमा
सब कोइ ॥ ६० ॥ ग्रथ माघ पूर्णमासी फल ॥ चौ॰ ॥ माघी की पूर्णमा
सब कोइ ॥ ६० ॥ ग्रथ माघ पूर्णमासी फल ॥ ... चुग्रनाजुना वते
निर्मल होइ ग्रन्न ग्राषाढ़ेसम तीजो उलियाइकाढावे
विगारे काज ॥ ६१ ॥ दो॰ ॥ माहि पूर्णमा बादर जिहि तिहि पाप करे दव

सुदीस पूनमी अरु मजा ... ग्यान वमीतिथि देखो ग्यान॥ गाज बीजु वादर इनके
निपजै अन घनो सुखसंजोग॥३८॥ पन्ह छंद॥ पोष सुदी छठ जाद जापन रसे
जानीये॥ घरी सहरग हो हितो एह पिछानीये॥ अमावस पाघरी सघो मी
जानो पंडिता॥३९॥ पोष वदी जे सपूनमी जलधर नै वरसेय॥ तो आद्रा
मैं वर्षसी जलथल एक करेय॥४०॥ पोष वदी की सपूनमी विना वर्षा वाद
र छाय॥ श्रावण सुदि की सपूनमी वर्षत मीह उछाह॥४१॥ पोष वदी द
शमी दिन वादर विजली होय॥ भादव वदि की द्वादशी वर्षा वेगल तीके
य॥४२॥ उपल्ला॥ पोष वदी वात रस चोदस विन वादर हो हिं चौह दस
तो सावन सुदि पूर्णमासी वर्षत मेघ जुमन फुलासी॥४३॥ दो॥ पोष
वदी की एकम जै हो वे बुधवार॥ नफा अन्न ते चौगणा वरशा तिन होज
ल धार॥४४॥ कुंडल्या॥ रविशनि मंगल तीनो वार हि पुष्य पुनर्वसु
वो घाटै॥ जे पोषी अमावस आई सो ही तोला अन्न विकाई॥४५॥ सो

दीलै सुधयुक्त जेवारै अमावस्या को विचार ॥ अंबर घनो बहुले हि न कोई ॥
घोसहु
घनव
र ॥ क तिस घाटा होई ॥४६॥ अथ माघ मास फल ॥ माघ मास हि मपरै वर्षा
वाज ॥ समो निमज्जै अत घनो प्रजा सुखन परा ज ॥४७॥ माघ सुदी
सप्तमी स्वाति कनी घां बादर होहीसमो अन्न ला तो जाणियो जोहि तितिजल धरी गो
र ॥४८॥ माघ बदी की एक मसै वादर अपवा वाय ॥ तेल घेऊ सस ता होवै अ
न्न घनो निजजाण ॥४९॥ माघ सुदी त तीया दिने वादर गाजस मेह ॥ ज
वगेहूं से वा के सम महिंगा हो सीतेहि ॥५०॥ माघ सुदी दिन चौथ के वाद
र गाजै जोर ॥ पान घने ना लेर बहुत सस्ता होवे दोड़ ॥५१॥ माघ सुदी की
पंचमी उत्तर चलै जो वाय ॥ तो न औकार जल विना नाश्व कोरा जाय ॥
॥५२॥ माघ सुदी छठ गाजै नहीं मेघ घेऊ कपास सञ्च महिंगी कहीए ॥ मा
घ सुदी सतैत्र जो निर्मल समोनउ पजै काल जेम पत्र ॥५३॥ माघ सु

रा
४

दुकाल त्रिकाल है विधि ॥ दो० ॥ यो तिक ग्रंथ सम द्रहै तां की ले एक बिंदु मे घमाल ।
मै रत्नी प्रगटे जिस जग चंदु ॥ ८ ॥ सो० ॥ मेघ कालि एक बात डंक कौ दीश्वर वच
न जहि है । वें जगत विख्यात सुन बात कौ प्रकास ॥ दो० ॥ यो तिष ग्रंथ घन हि जान
हो न हि जानति व्याकरण पिंगल पठियो न, भ्रमर मति न हि घटा कौ घरन ॥ १० ॥
हीन कहो जिस मातिक छंद नावी की जोई ॥ करि कृपा कवि मोपर लंपो सुधा
धी सोई ॥ ११ ॥ स्तर प्रहि वानी प्रति गहि न मूर्ख समझ तिना हि तिन के समझ हे
त पर सुगम रचि मैं पाहि ॥ १२ ॥ चौपई ॥ मेघ विचार प्रथम ऐयाहि जैसे
के कहि वनाइ काल सुकाल तहि बात ॥ ज्यूं कि पातक यो निरख्यात ॥ १३ ॥
दोहरा ॥ कार्तिक प्रादि से दे वीये, प्रापन मास जो, प्रति ॥ नीकै घमो एहि स
मे की जानो सत्य वितंत ॥ १४ ॥ प्रथम कार्तिक मास फल ॥ दो० ॥ कार्तिक सुदी
द्वितीया दिने चउत चंद्र या लाल पश्चिम दिसि वादल लर तौ ता मे टे जग का
ल गर्भ रहि पात नक्षमे को विघ्न नि हो वै कोई ॥ तौ वैठ जल धार घनो को

मे॰मा॰ २

इनसी पाहोइ ॥१६॥ कार्तिक मावास्या आदिकर उत्तम जान वैशाख ॥ जो रोहिणि
इन मै षिवै विगर यो गर्भ स्रवाव ॥१७॥ चौ॥ पाहण रहजगे लो वर्षा न्हे मिको प
ताल गिर पाय ॥ रवि शशि शिग तिन के तत्व टे तो अरिष्ठ जानो सत्य मे ॥१८॥ दो॰
अरिष्ठ जिस नक्षत्र मे होवे ताका करो विचार ॥ तिस नक्षत्र मै जानीये पर
तिन ही जल धार ॥१९॥ चौ॰॥ कार्तिक वदि की त्रियोदश जान मंघ रिवदि
एकादशा ॥ पोष वदि नौमी तिथि कही माघ वदी सप्तमी सही ॥२०॥ चौ॰॥
फाल्गुण वदि की पंचमी होइ चेत वदी त्रितीया तिथि जोई ॥ इन दिन जो
बिजुली होइ मेघ पूर्ण गर्भ स्त्रु जानो तेह ॥२१॥ चौ॰॥ घनी साख निपजे च
हुं ओर होइ सकाल न लखयो होइ ॥ जो एस तिथि मे विजुली ना होवे तो अम जा
नो काल समेत ॥२२॥ दो॰॥ कार्त्तिक शुदि वार रवि दिने बदर छाया होइ ॥ तौ
आषाढ मेव संसी ऊपजे अच्छन्न सत्य कोइ ॥२३॥ कार्त्तिक वदि की द्वादशी पो

राम २

23

उम्र
१

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि फलं
पल्याः प्रपातने यद्यदूं गेन्द्राणां दृष्टान्त त्तद्देवविशेषतः
गार्ग्यवाराहमाण्डव्यैर्नारदाद्यैर्यथोदितम् तत्तत्काल
विशेषेण ज्ञातव्यं सुविचक्षणैः । शिरेस्थितायां प्रिय
माप्नोति वामकपोले प्रियनाशनेति दक्षकपोलेप्रि
यसंपदेति निर्बन्धन स्येकुचरोगबंधनम् ॥ कर्णं
तेनिधनं प्रोक्तं ब्रह्मस्थानेप्सतिप्रदा ललाटेप्रिय
माप्नोति भ्रूमध्ये धनहारिणी धनलाभो भ्रुवोर्मध्ये
दृष्टिनयने शुभं वामेवं धनमाप्नोति नासाग्रे व्या
हनंभवेत् लाभलक्षणो दक्षिणेकर्णेदुर्वार्त्ताप्र
तिश्रावत्तरे । गंडुप्रदेशे भवदंचभोजनंचशुभा
वहम् अधरेस्पर्शमधरे ऊर्ध्वे कलहोभवे
त् संपुटे मृत्युमाप्नोति चिबुके राजविग्रहः ॥ १

वामस्कंधे च हृत्केशं पश्चात्स्यं वामबाहुस्तु करे कलत्र कलहं मणिवेधे
नापदे २६

रुहृत्प्रागमनं कंठे वह्निः कंठेरिपोर्भयं विजयं दक्षिणे
स्कंधे वा बाह्वोर्वेधु स्यादृद्धिमान् अर्थहानिः करे प्रोक्ता
मणिवेधे विभूषणां करपृष्ठेऽर्थहानिः स्यादंगुल्यांषि
यदृष्टांनः नखेषु धान्यहानिः स्यात्करमध्ये महासु
खं पृष्ठेपरोत्सवाजोच पार्श्वयोर्वेधु वेधनं लनयुगे
तु सौभाग्यं कलयोः स्त्रीसुखावहं करपृष्ठेस्य भौंगु
ल्यां भूषणां हानिकृन्नखे करमध्ये धनप्राप्तिः कक्षा
वक्षादि भूषणं जयः कीर्तिर्भवेन्नाभौ वंधनेवा
धिवंधनं गुह्यस्थाने मृतिः ज्ञेयाकुत्तयोर्वस्त्रहा
निकृत् जान्वोस्तु वाहनप्राप्तिः गुल्फयोः स्त्रीविघा
तकृत् जंघयोर्गमनंचैव पादयोर्वधनोदित मू
खरयोर्मृत्युमाप्नोति पादपृष्ठे सुखप्रदा पादांगु
ल्यां हतानाशाः पापकृन्मन्नखेषु च प्राग्वदयो

३

४

वदेत्तत्पादे तलेसुबंधनिर्दिष्टं ग्रीवाया केशादिदृष्टे मृत्युर्ध्रुवं
निर्धनं धनमेव च यदुक्तं फलादेशं यत्स्वकीयप्रचि
क्षिते प्रायने संस्थिता पल्लीपतिता वाप्यशुभायदि अ
माशुभं फलं प्रोक्तं तत्रैव वयचोदितं उत्संगे संस्थि
ता पल्लीपतिता यदि दृश्यते पतितफलमादेष्टव्यं बंधू
नां चैव सौहृदं गम्यमाने तु पल्ली च पतिता नृतद्वै
द्धादि यथोक्तं फलं शत्रूणामादेश्यमिति निश्चयः
आहारे पतिता पल्ली तदाहारं परित्यजेत् विनाक्ते
न तु पात्रेषु व्याधिशोकभयप्रदा देवालये तिरा
ज्यस्य सभामध्ये सभापतिः पचनादौ पतेत्पल्ली
गृहिणी मृत्युमाप्नुयात् गृहमध्ये गृहस्थस्य
द्वौ मध्यतो त्तमे नरे पल्याः परस्परं युद्धं पतितं य
दि दृश्यते दुष्टं च परिहाराय शान्ताय गृहस्वाम

३

स्तकान् यदि पल्लीप्रपातेन दीपनाशो भवेद्गृ
हे तद्गृहं नाशमाप्नोति त्यजेन्मासत्रयेपि च वंदि
तेभ्यो गोष्ठेव पल्लीपतनं दृश्यते मानहानिर्भवे
त्तस्य फलं हो वा भविष्यति अथ युद्धेषु च दृश्यंते पल्ली
पतनं दृश्यते स्वहस्ते पुष्पमात्रे तिलस्थाने शत्रुहा
नि स्या वाहनेषु प्रदृश्यंते गमनं परिदूरतः स्वजन्म
दिवसे चैव जन्मदेशे प्राप्तिने धने चंद्राष्टमे व्यतीपा
ते मृत्युदग्धदिने तथा विषनाडी कालनाडी सूर्य
तयहणादिषु कालेष्वेवं विजानीयाद्युक्तं नहि
शोभनं इति कुरुष फलानि ॥ अथ स्त्रीपला
न्याह अथ स्त्रीणां प्रवक्ष्यामि फलं पल्याः प्रपात
ने तदेव कथ्यते चात्र ज्ञातव्यं हि विचक्षणैः श्रि

5

रेसौख्यन्तु कलहं केशांतेवं धनसंपत्तिः ललाटे व
स्त्रलाभश्च भ्रुवोर्व्याधिबंधनं भ्रूमध्ये राजसन्मा
नं नेत्रयोः प्रियदर्शनं नासिकायांतु सौभाग्यं वक्त्रे
मिष्टान्नभोजनं कर्णयोर्भूषणलाभः कपोले व्या
धिसंभवः हनुप्रदेशे कलहः कंठे शत्रुविनाश
नं स्तनयुग्मे च सौभाग्यं हृदि सौख्यविवर्द्धनं उदरे
धनसंपत्तिः कुक्ष्योर्व्याधिसंभवः स्कंधयोरश्वप्रा
प्तिश्च बाह्वोर्धनसंपदा करयोरर्थनाशाय मणिवंधे
विभूषणं करमध्ये त्वर्थहानिः करमध्ये महस्त
खं अंगुल्यां प्रियसंतोषः स्कंधमध्ये महद्भयम्
कुक्षौ सत्पुत्रलाभश्च कन्यालाभश्च वंधने पृ
ष्ठे शोकभयं विंद्यात्पार्श्वयोः सुहृदः प्रियं नाभौ

चकलहो मृत्युः श्वश्रुरे पतितं तथा योन्यां पतिते रति
र्हीनिः कक्षयोर्वस्त्रहानिः कट्यां जंघयोर्वस्त्रलाभं
च गुह्ये च परमापदा जान्वोर्लग्ने धनप्राप्तिः पादयो
स्तु तथा भवेत् पादपृष्ठे सुखप्राप्तिर्धनहानिर्नखा
ग्रलीः एतदुक्तं फलं स्त्रीणां विधवायाः विपर्ययः
दृष्ट्वा चोर्द्ध्वमुखीं पल्लीं फलं वदस्व शुभाशुभम् सा
चेदधोमुखी दृष्ट्वा शुभावाशुभदं फलं पल्ल्याः
प्रपतनं चैव सरटस्य प्ररोहणं अथ
पल्ल्याः पतने तिथिवारादि फलान्याह प्रतिपत्ते
प्रासंतापो द्वितीयायां राज्यदायिनी तृतीयायां भवे
ल्लाभश्चतुर्थ्यां रोगमेव च पंचम्यां चैव षष्ठ्यां च
सप्तम्यां च धनागमं अष्टम्यां च नवम्यां च दशम्यां
मरणं स्मृतं एकादश्यां च लाभो द्वादश्यां सर्वसं

पदा त्रयोदश्यां वृद्धहानिश्चतुर्दश्यां धनक्षयम्
पौर्णिमास्याममावास्यां कष्टो भवति नान्यथा सौ
म्येषु रौद्रेषु पौष्णे च धनलाभफलप्रदा भानुभौमा
र्किवारेषु धनहानिः प्रजायते । अथ नक्षत्रफलं
अश्विन्यामायुरारोग्यं भरण्यां रोगमाप्नुयात् कृ
त्तिका धनहानिं च रोहिण्यां मृगे संपदा आर्द्रायां
च भवेत्पीडा धनलाभः पुनर्वसौ पुष्ये लाभं वि
जानीयात्सार्पे चैव महद्भयं मघाद्वे मकरीस्ते
या पूर्वायां क्लेशमेव च उत्तरादि चतुर्ष्वि क्षेम
मं भवति निश्चितं विशाखायां भवेत्कष्टं मैत्रे
च सुखमादिशेत् ज्येष्ठादित्रितये कष्टं वैश्व
देवे सुखं लभेत् श्रवणे राज्यसन्माने धनि
ष्ठा शुभदायका प्रोक्ता ताराश्च भा प्रोक्ता पूर्वाभा

अभिजित्धनदस्तथा

दूषदामध्ये ऽत्तरा रेवत्यां हानिश्चैव प्रजायते अथ
योगफलम् ध्रुवे व वज्रे व्यतीपाते व्याघाते परिघेषु च
वैधृतौ घात नित्यस्याद् रन्ये योगाः शुभप्रदाः अथल
ग्नफलं मेषे च शुभदं प्रोक्तं वृषे हानिस्तथैव च मि
थुने रोगसंप्राप्तिः कर्के कल्याणमेव च सिंहे च पा
ललाभाय कन्या धनविनाशिनी तुले च धनला
भाय वृश्चिके धनदस्तथा धने ज्ञानमवाप्नोति मक
रे वहु लाभदा कुंभे हानिश्च विज्ञेया मीने हानिः
प्रजायते लग्नफलमिति प्रोक्तः शुभाशुभं च क
थ्यते मृत्युयोगे दग्धदिने क्रूरेयदिनि रीक्ष्यते
अष्टमस्थे क्रूरयुक्ते विष्टिवैधृति दूषितः ॥ अथ
पल्लीपतने प्रहरफलानि ॥ पल्ली च प्रथमे यामे म
स्तके सुखदायिनी मुख मिष्टान्न भोगी स्यात्स्पाद

प

10

ध्यांमरणं ध्रुवं मध्याह्ने पतिता पल्ली दक्षिणे सुखसंप
दा वामांगे कुरुते व्याधिं वृहत्सहारि च वसुदा पल्लीतैजी
पे यामे च पुष्टिं वै शोच रोगदा तालुके कुरुते व्याधिं
कुत्रहारि च वसुदा करे तद्वित्तं व्याधिं पादौ हानि
करं तथा मध्यायां पतिता पल्ली मस्तके वानि मसुदा कें
कपाले कुरुते सौख्यं जंघायां तु पापदायिनी ॥ इति
प्रहरफलम् ॥ सभायां पतिता गोधा मूत्र लेपति
तायदि चेहापरीत्तये ह्री मानस्वी दिदिद्रचादि
पोत्तर पूर्वे च गमनं यात्रा मासे ध्यामग्नि भीतिर्नै
त्र याम्यायां मरणं विद्यात् नैऋत्यां कलहो भवेत्
पश्चिमे धनलाभं च वायव्यां व्याधिपीडनम् कौ
वेर्यां कार्यसिद्धिं च ईशान्यां चिंतितं भवेत् चतु
स्थाने भवेद्राज्यं स्थाने लाभं ललाट गे पश्चात्से

५

पतितानाम्मोक्षोकजातं तथैव च ॥ ३ ॥ इति पल्लिकादि
कानां फलानाम् ॥ अथ स्पर्शमात्रे शांतिविधिः ॥ ६ ॥ ॥
पल्याः स्पर्शनमात्रेण तत्रैवं स्नानमाचरेत् गव्यं
पंचविधं प्राश्य कुर्यादाज्यावलोकनम् प्रस्थे वा
व्यस्थ वाऽथ शान्तेयदीच्छेच्छुभमात्मनः पुण्याह
वाचनं कुर्यात् सिंचेच्छान्त्योदकेन च प्रतिरू
पैः हेमलोममयैः कुर्याद्दिव्यानुसारतः रक्तवस्त्रे
ण संवेष्ट्य गंधपुष्पैः प्रपूजयेत् तस्याग्रे स्थाप
येत् कुंभं कलशं जलपूरितं वस्त्रमाल्यैरलंकृत्य
स्थापयेत्तंडुलोपरि पंचामृतं पंचरत्नं पंचग
व्यं पल्लवम् पूजयेत् पुष्पगंधाद्यैः लोकपा
लक्रमेण तु रुद्रायेति सूक्तेन यथाविधि चि
नोति च वस्त्रगंधादत्तैः पुष्पधूपदीपैर्मनोर

मेः अग्निस्थापनं कृत्वा होमकर्म समारभेत् होमं
च कारयेत्तत्र वेदोक्तविधिना ततः शमीसमिद्घृ
तं च शेतराज्याहुतीः स्मृतः मृत्युंजयेति मंत्रेण
अष्टोत्तरसहस्रकं अष्टोत्तरशतं वापि होमं कुर्यात्
द्विजोत्तमैः ततः पंचाहुतीर्हुत्वा सघृतैरन्नपाय
सैः मृत्युंजय महादेव कालकालाधिपाय च स
र्वोत्पातविनाशाय हुनेत् स्विष्टकृत् ततः होम
शेषं समाप्यैवमुपहारं समर्पयेत् द्विजेभ्यो दक्षि
णां दद्यादाचार्याय विशेषतः सवत्सप्रतिमां द
द्यादाचार्याय सदक्षिणां ब्राह्मणान् भोजयेत्स
स्वाद्यया विभवविस्तरात् आशीर्वादं च गृह्णी
त द्विजेभ्यः पारणां व्रजेत् सुवर्णतिलदानं च
कुर्याद्वित्तानुसारतः सूर्यस्याभिमुखो भूत्वा

नमस्कृत्यैकविंशतिः इत्थंसम्यग्विधानेन
शांतिंपल्याःसमारभेत्‌ तस्यतुविजयोलक्ष्मीः
कीर्त्तिवृद्धिःप्रजायते अनेनैवविधानेन
दुरितंहरतेध्रुवं [illegible]मंभवतेनिःसंकर्मसि
द्धिर्भविष्यति ॥इतिश्रीकृत्तसारएपकेगार्ग्य
मतेपल्लीपतनसरटारोहणादुष्टकष्टशम
नार्थंशांतिविधिःसमाप्ता॥ शुभमस्तुले
खकपाठकयोः संवत्‌ १८७८ आश्वि
नेमासि श्रीहरगोविंदपुरेघनैयाख्यो
लिलेख॥ राम॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राम

15

कायु यदि पल्लीप्रपातेन दीपनाशो भवेद्गृहे तद्
हं नाशमाप्नोति मार्जारमत्र येपि च वंदितेभुव
तो ह्येव पल्लीपतनेति दृश्यते स्वहस्तेयुद्धमाप्नोति
स्वस्थानेषाद्गृहानिद्रा वाहनेषु प्रदृश्य तेगमनं
परिदूरतः स्वजन्मदिवसे चैव जन्मर्क्षप्राप्तिने
धमे चेद्द्रष्टुमेव्यतो मातस्य दृग्घदिने तथा वि
षनाडीस्मनाडी कालनाडी षूत्पातग्रहणादि
षु कालेष्वेवं विजानीयाद्यत्नेन हि शुभं नम्
इति पुरुषफलानि ।। अथ स्त्रीफलान्याह ।। अथ
स्त्रीणां प्रवक्ष्यामि फलं पल्याः प्रपातने तदेवक
थ्यते चात्र ज्ञातव्यं सुविचक्षणैः शिरसो वाप्युक
लहं केशांते वैधनकं तिः ललाटे वज्रलाभश्च
कर्णे वामे स्थितं वै धनं भ्रूमध्ये राजसन्मानं नेत्रयोः